

काननि दै अँगुरी रहिबो जबहीं मुरली धुनि मंद बजैहै।

मोहनी तानन सों रसखानि अटा चढ़ि गोधन गैहै तौ गैहै॥ गार

टेरि कहौ सिगरे ब्रजलोगनि काल्हि कोऊ कितनो समुझैहै।

माइ री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै, न जैहै, न जैहै॥

मोहित करने  
काली

पुकारकर

सारं

कल

एक लोकगीत

कितना ही

### प्रश्न-अभ्यास

1. ब्रजभूमि के प्रति कवि का प्रेम किन-किन रूपों में अभिव्यक्त हुआ है?
2. कवि का ब्रज के वन, बाग और तालाब को निहारने के पीछे क्या कारण हैं?
3. एक लकुटी और कामरिया पर कवि सब कुछ न्योछावर करने को क्यों तैयार है?
4. सखी ने गोपी से कृष्ण का कैसा रूप धारण करने का आग्रह किया था? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।
5. आपके विचार से कवि पशु, पक्षी और पहाड़ के रूप में भी कृष्ण का सान्निध्य क्यों प्राप्त करना चाहता है?
6. चौथे सवैये के अनुसार गोपियाँ अपने आप को क्यों विवश पाती हैं?
7. भाव स्पष्ट कीजिए—  
(क) कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।  
(ख) माइ री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै, न जैहै, न जैहै।
8. 'कालिंदी कूल कदंब की डारन' में कौन-सा अलंकार है?
9. काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए—  
या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।